

# International Journal of Social Science and Education Research

ISSN Print: 2664-9845  
ISSN Online: 2664-9853  
Impact Factor: RJIF 8.42  
IJSSER 2025; 7(1): 993-997  
[www.socialsciencejournals.net](http://www.socialsciencejournals.net)  
Received: 16-04-2025  
Accepted: 19-05-2025

डॉ० रंजु कुमारी  
पीएच० डी०, इतिहास विभाग,  
सामाजिक विज्ञान संकाय, भूर्णे  
नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा,  
बिहार, भारत

## बिहार के शिक्षा में नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान: एक अध्ययन

डॉ० रंजु कुमारी

DOI: <https://www.doi.org/10.33545/26649845.2025.v7.i11.396>

### सारांश

बिहार के शिक्षा क्षेत्र में नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय, जिसकी स्थापना 5वीं शताब्दी ईस्वी में गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम ने किया, प्राचीन भारत का ही नहीं बल्कि विश्व का भी एक महान शिक्षा केंद्र था। यह विश्वविद्यालय न केवल बिहार बल्कि संपूर्ण एशिया में ज्ञान और शिक्षा का प्रसार करने वाला केंद्र रहा।

नालंदा विश्वविद्यालय में धर्म, दर्शन, गणित, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, साहित्य, कला और भाषा सहित अनेक विषयों का गहन अध्ययन कराया जाता था। यहाँ हजारों विद्यार्थी भारत के विभिन्न प्रांतों के साथ-साथ चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, मंगोलिया और श्रीलंका से भी आकर अध्ययन करते थे। शिक्षा व्यवस्था अनुशासन, शोध और वाद-विवाद की परंपरा पर आधारित थी, जिससे यह विश्वविद्यालय ज्ञान का जीवंत प्रयोगशाला बन गया।

नालंदा ने शिक्षा के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीयता की भावना को जन्म दिया। यहाँ विद्वानों और विद्यार्थियों के बीच संवाद की परंपरा ने वैश्विक ज्ञान-संवाद का मार्ग प्रशस्त किया। इसने बिहार को प्राचीन काल में विद्या की भूमि के रूप में पहचान दिलाई। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार और महायान दर्शन के विकास में भी नालंदा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

यद्यपि 12वीं शताब्दी में आक्रमणों के कारण नालंदा का विनाश हुआ, फिर भी इसका प्रभाव भारतीय शिक्षा परंपरा और वैश्विक शैक्षिक धरोहर में आज भी जीवित है। आधुनिक काल में नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण बिहार के लिए गौरव का विषय है और यह शिक्षा, शोध तथा वैश्विक सहयोग का प्रतीक बनकर पुनः अपनी ऐतिहासिक धरोहर को जीवंत कर रहा है।

**कूटशब्द:** खगोलशास्त्र, धार्मिक सहिष्णुता, बौद्धिक स्वतंत्रता, नालंदा विश्वविद्यालय, ज्ञान-संवाद।

### परिचय

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 5वीं शताब्दी ईस्वी में गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने की। यह विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म, विशेषकर महायान परंपरा का प्रमुख अध्ययन केंद्र बना। लगभग 700 वर्षों तक यह विश्वविद्यालय ज्ञान का आलोक फैलाता रहा।

नालंदा विश्वविद्यालय भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीनतम और विश्वविद्यालय शिक्षा-केन्द्रों में से एक था। इसका उद्देश्य पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में गुप्तकालीन शासक कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में हुआ माना जाता है। यह विश्वविद्यालय बिहार के वर्तमान नालंदा जिले में स्थित था। नालंदा केवल एक शिक्षण संस्था ही नहीं, बल्कि ज्ञान, शोध और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का महान केन्द्र था, जिसने लगभग सात शताब्दियों तक निरंतर शिक्षा का प्रकाश फैलाया। [1] इस विश्वविद्यालय का महत्व इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि यहाँ अध्ययन के लिए चीन, कोरिया, जापान, मंगोलिया, श्रीलंका, तिब्बत और मध्य एशिया से हजारों छात्र आते थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग और इत्सिंग ने नालंदा की शिक्षा व्यवस्था, छात्र जीवन, पुस्तकालय और शिक्षकों की ख्याति का विस्तृत वर्णन किया है। ह्वेनसांग के अनुसार यहाँ दस हजार से अधिक विद्यार्थी और हजार से अधिक आचार्य रहते थे।

**Corresponding Author:**  
डॉ० रंजु कुमारी

पीएच० डी०, इतिहास विभाग,  
सामाजिक विज्ञान संकाय, भूर्णे  
नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा,  
बिहार, भारत

नालंदा की पाठ्यचर्या अत्यंत व्यापक थी। यहाँ वेद, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, चिकित्सा, ज्योतिष, बौद्ध दर्शन (महायान और हीनयान दोनों), न्याय, धर्मशास्त्र और साहित्य जैसे विषयों का अध्ययन कराया जाता था। विश्वविद्यालय का पुस्तकालय ‘धर्मगंज’ अत्यंत विशाल था और इसमें लाखों पांडुलिपियाँ सुरक्षित थीं। कहा जाता है कि इसमें तीन मुख्य भवन थे - रत्नसागर, रत्नरंजक और रत्नोदयि।<sup>[2]</sup> नालंदा का प्रशासनिक ढाँचा भी अनुकरणीय था। नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत की शिक्षा परंपरा का अद्वितीय प्रतीक था। इसकी स्थापना 5वीं शताब्दी में गुप्तकालीन शासक कुमारगुप्त द्वारा की गई थी। विश्वविद्यालय का परिसर अत्यंत विस्तृत और सुव्यवस्थित था। इसमें विशाल पुस्तकालय, छात्रावास, मंदिर, उद्यान और व्याख्यान कक्ष बने हुए थे। परिसर में लगभग 10000 विद्यार्थी और 1500 शिक्षक निवास करते थे, जो इसे उस समय का सबसे बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय बनाता था।

नालंदा का पुस्तकालय ‘धर्मगंज’ अत्यंत प्रसिद्ध था, जिसमें लाखों पांडुलिपियाँ संरक्षित थीं। यह तीन भागों में विभाजित था - रत्नसागर, रत्नोदयि और रत्नरंजक। यहाँ के विहार (आवासीय भवन) बहुमंजिला थे, जिनमें अध्ययन और ध्यान दोनों के लिए स्थान उपलब्ध था। परिसर की संरचना बौद्ध वास्तुकला पर आधारित थी, जिसमें स्तूप, विहार और मंदिरों का अनूठा संयोजन दिखाई देता था।<sup>[3]</sup>

नालंदा विश्वविद्यालय का परिसर केवल भौतिक संरचना नहीं था, बल्कि ज्ञान और साधना का केंद्र था। यहाँ भारत ही नहीं, बल्कि चीन, तिब्बत, कोरिया और जापान से भी छात्र शिक्षा प्राप्त करने आते थे। इसकी सुव्यवस्थित संरचना और समृद्ध परिसर ने बिहार और सम्पूर्ण एशिया के शैक्षिक विकास में अमूल्य योगदान दिया।<sup>[4]</sup>

यहाँ प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी, जिसे उत्तीर्ण करना ही विद्वता का प्रमाण माना जाता था। शिक्षण पूरी तरह निःशुल्क था और समस्त व्यवस्था राजकीय तथा सामाजिक सहयोग से चलती थी।

बारहवीं शताब्दी में जब बैखियार खिलजी ने बिहार पर आक्रमण किया, तब नालंदा विश्वविद्यालय को भी नष्ट कर दिया गया। आक्रमणकारियों ने पुस्तकालय में आग लगा दी, जो कई महीनों तक जलती रही और अनगिनत ज्ञान-संपदा नष्ट हो गई। इस विघ्नसे से भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा को गहरी क्षति पहुँची।

आज नालंदा विश्वविद्यालय केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि भारत की गौरवशाली शिक्षा संस्कृति का प्रतीक है। हाल के वर्षों में भारत सरकार ने इसके पुनर्निर्माण का प्रयास किया है और 2014 में आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। यह पहल इस तथ्य का द्योतक है कि नालंदा का आदर्श आज भी जीवित है और वैश्विक शिक्षा जगत के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।<sup>[5]</sup>

### शोध का उद्देश्य

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है

1. नालंदा विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक विकास और संरचना का अध्ययन।

2. बिहार की शिक्षा प्रणाली में इसके स्थायी योगदान का विश्लेषण।

3. पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका को समझना।

### शोध की पद्धति

यह शोध पत्र मुख्यतः ऐतिहासिक और साहित्यिक स्रोतों पर आधारित है। इसमें हेनसांग और इतिंग के यात्रावृत्तांत, आधुनिक विद्वानों की रचनाएँ, पुस्तकालय संदर्भ और नालंदा विश्वविद्यालय की आधिकारिक जानकारी का उपयोग किया गया है। साथ ही तुलनात्मक पद्धति से प्राचीन और आधुनिक शिक्षा के बीच संबंधों का विश्लेषण किया गया है।

### प्रस्तावना

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 5वीं शताब्दी ईस्वी में गुप्तवंशीय सम्राट कुमारगुप्त प्रथम (413-455 ई.) के शासनकाल में हुई। “नालंदा” शब्द संस्कृत के “ना+अलं+दा” से निर्मित है, जिसका अर्थ है - “ज्ञान प्रदान करने वाला जो कभी थमता नहीं।”

यह विश्वविद्यालय पाटलिपुत्र से लगभग 55 मील दक्षिण-पूर्व और राजगीर के निकट स्थित था। यहाँ विशाल इमारतें, छात्रावास, पुस्तकालय और बौद्ध विहार थे। इसकी प्रशासनिक व्यवस्था अत्यंत अनुशासित और व्यवस्थित थी।

नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश अत्यंत कठिन था। प्रवेशार्थियों से गहन प्रश्न पूछे जाते थे। केवल वही विद्यार्थी प्रवेश पाते थे, जो ज्ञान की गंभीरता और जिज्ञासा को सिद्ध कर पाते थे।<sup>[6]</sup>

नालंदा विश्वविद्यालय ने बिहार की शिक्षा और सांस्कृतिक परंपरा को गहराई से प्रभावित किया। इसके कुछ प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं

### 1. उच्च शिक्षा का विकास

नालंदा विश्वविद्यालय भारतीय शिक्षा और संस्कृति की अमूल्य धरोहर रहा है। बिहार की भूमि पर स्थापित यह विश्वविद्यालय न केवल भारत, बल्कि पूरे एशिया का पहला आवासीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय माना जाता है। इसकी स्थापना गुप्तकालीन सम्राट कुमारगुप्त प्रथम (5वीं शताब्दी) ने की थी। नालंदा शिक्षा केंद्र उच्च शिक्षा के विकास की दृष्टि से अद्वितीय था, जहाँ हजारों विद्यार्थी और शिक्षक साथ रहकर ज्ञानार्जन करते थे।

यहाँ बौद्ध दर्शन, तर्कशास्त्र, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र, व्याकरण और साहित्य जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती थी। चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत और दक्षिण-पूर्व एशिया से विद्वान विद्यार्थी यहाँ अध्ययन हेतु आते थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री हेनसांग और इतिंग ने नालंदा की शिक्षा व्यवस्था का विस्तृत वर्णन किया है। विश्वविद्यालय की विशेषता यह थी कि यहाँ प्रवेश कठिन परीक्षा द्वारा ही संभव था, जो उच्च शिक्षा के स्तर और गुणवत्ता को दर्शाता है।<sup>[7]</sup>

नालंदा ने बिहार ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में उच्च शिक्षा की परंपरा को सुदृढ़ किया। यह शिक्षा का वह केंद्र था जिसने शिक्षा को व्यावहारिक और शोधपरक बनाया। आधुनिक विश्वविद्यालय प्रणाली की नींव भी इसी प्राचीन परंपरा में निहित मानी जा सकती है।

आज पुनः स्थापित "नालंदा विश्वविद्यालय" उसी गौरव को पुनर्जीवित करने का प्रयास है, जिससे बिहार उच्च शिक्षा के वैश्विक मानचित्र पर पुनः अपनी ऐतिहासिक पहचान बना सके।

इस प्रकार, नालंदा विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा के विकास में जो योगदान दिया, वह बिहार की ऐतिहासिक गौरवगाथा का अविस्मरणीय अध्याय है। [8]

**2. शोध और अनुसंधान की परंपरा:** विश्वविद्यालय में बौद्ध दर्शन, व्याकरण, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, तर्कशास्त्र और साहित्य जैसे विषयों पर गहन अध्ययन और शोध कार्य होते थे। नालंदा के विशाल पुस्तकालय "धर्मगंज" में लाखों ग्रंथ संरक्षित थे, जो विद्यार्थियों के लिए शोध का आधार बना। यहाँ के विद्वानों ने तर्कशास्त्र, दार्शनिक चिंतन और चिकित्सा विज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अनुसंधान की परंपरा का महत्व नालंदा में केवल सैद्धांतिक अध्ययन तक सीमित नहीं था, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान के प्रसार पर भी बल दिया जाता था। यही कारण है कि नालंदा ने भारत की बौद्धिक विरासत को विश्व स्तर पर स्थापित किया। आज आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय इस ऐतिहासिक धरोहर को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहा है और बिहार की शिक्षा में शोध एवं अनुसंधान की परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। [9]

### 3. समाज सुधार में योगदान

समाज सुधार की दृष्टि से नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। इसने ज्ञान के प्रसार से अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियों को चुनौती दी। यहाँ शिक्षा सभी वर्गों और देशों के विद्यार्थियों को दी जाती थी, जिससे सामाजिक समानता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिला। धार्मिक सहिष्णुता और बौद्धिक स्वतंत्रता की परंपरा ने समाज को उदार और प्रगतिशील दिशा प्रदान की। नालंदा के विद्वानों ने विवेक, तर्क और मानवता के मूल्यों को आगे बढ़ाया, जिससे शिक्षा समाज सुधार का साधन बनी। [10]

अतः नालंदा विश्वविद्यालय ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार में भी गहन योगदान दिया, और बिहार की गौरवशाली विरासत को विश्व पटल पर स्थापित किया।

### 4. शिक्षा का लोकतांत्रिक स्वरूप

नालंदा में तर्कशास्त्र, चिकित्सा, गणित, खगोल, साहित्य और धर्म-दर्शन जैसे विषयों का गहन अध्ययन होता था। छात्र और शिक्षक स्वतंत्र रूप से संवाद करते थे, जिससे ज्ञान के आदान-प्रदान की एक लोकतांत्रिक परंपरा विकसित हुई। शिक्षा न केवल अभिजात वर्ग तक सीमित रही, बल्कि विभिन्न पृथ्वीभूमियों से आए विद्यार्थियों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराए गए।

इस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय ने बिहार में शिक्षा को समावेशी और लोकतांत्रिक स्वरूप दिया, जिसका प्रभाव आज भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के आदर्शों में देखा जा सकता है। यह ज्ञान, समानता और वैश्विक दृष्टि का अद्वितीय प्रतीक है। [11]

**5. स्थानीय संस्कृति पर प्रभाव:** बिहार की शिक्षा व्यवस्था को नालंदा ने एक सुनियोजित रूप प्रदान किया। पाठ्यक्रम, पुस्तकालय और अनुशासन ने विद्वत् संस्कृति को समृद्ध किया। स्थानीय समाज में शिक्षा का महत्व बढ़ा और ज्ञानार्जन को जीवन का सर्वोच्च आदर्श माना गया। इससे बिहार में बौद्ध संस्कृति और करुणा, शांति तथा सहिष्णुता की धारा मजबूत हुई।

सांस्कृतिक दृष्टि से नालंदा ने कला, स्थापत्य और साहित्यिक अभिव्यक्ति को भी प्रभावित किया। इसके स्तूप, विहार और मूर्तिकला ने स्थानीय शिल्प परंपरा को उच्च स्तर तक पहुँचाया। साथ ही, यहाँ विकसित संवाद और विचार-विमर्श की परंपरा ने बिहार को बौद्धिक विमर्श का केन्द्र बना दिया। [12]

इस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय ने बिहार की शिक्षा व्यवस्था को वैश्विक पहचान दिलाई और स्थानीय संस्कृति में ज्ञान, शांति और सृजनात्मकता की अमिट छाप छोड़ी।

नालंदा विश्वविद्यालय के प्रमुख आचार्यों की सूची को एक सारणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

**तालिका 1: प्रमुख योगदान / विषय**

क्रम	आचार्य (Acharya)	काल/सम्बन्ध	प्रमुख योगदान / विषय
1	शीलभद्र (Silabhadra)	7वीं शताब्दी, हेनसांग के गुरु	योगाचार दर्शन के आचार्य, नालंदा के प्रधान
2	धर्मपाल (Dharmapala)	6वीं शताब्दी	योगाचार दर्शन, बौद्ध तर्कशास्त्र
3	नाराजुन (Nagarjuna)	2-3री शताब्दी	मध्यमक (Madhyamaka) दर्शन, शून्यवाद के प्रतिपादक
4	असङ्ग (Asanga)	4थी शताब्दी	योगाचार (Vijnanavada) दर्शन के प्रणेता
5	वासुबन्धु (Vasubandhu)	4थी-5वीं शताब्दी	अभिधर्म कोश, योगाचार और तर्कशास्त्र
6	धर्मकीर्ति (Dharmakirti)	7वीं शताब्दी	बौद्ध तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा
7	शान्तिदेव (Santideva)	8वीं शताब्दी	(बोधिसत्त्वचर्यावतार)
8	शंतरक्षित (Santaraksita)	8वीं शताब्दी	तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार, मध्यमक-योगाचार समन्वय
9	कामलशील (Kamalashila)	8वीं शताब्दी	तिब्बत में दर्शन का प्रचार, Bhavanakrama ग्रंथ
10	आर्यदेव (Aryadeva)	3री-4थी शताब्दी	नाराजुन के शिष्य, मध्यमक दर्शन
11	हरिभद्र (Haribhadra)	8वीं शताब्दी	योगाचार और प्रज्ञापारमिता पर टीकाएँ
12	अतीश (Atisa Dipankara)	10वीं-11वीं शताब्दी	तिब्बत में बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार में योगदान

(अनेक स्रोतों के अध्ययन के बाद निष्कर्ष के आधार पर तालिका तैयार किया गया है।)

## नालंदा का पतन और उसके कारण

12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नालंदा विश्वविद्यालय का पतन प्रारंभ हुआ और अंततः इसका विनाश हो गया। इसके पतन के पीछे कई कारण रहे जिन्हें निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है

- राजनीतिक अस्थिरता और संरक्षण का अभाव - नालंदा विश्वविद्यालय का उत्थान राजाओं के संरक्षण पर आधारित था। गुप्त, पाल और अन्य शासकों ने इसे भरपूर संरक्षण दिया। लेकिन जैसे-जैसे बिहार और मगध में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ी और छोटे-छोटे साम्राज्यों में बंटवारा हुआ, विश्वविद्यालय को आवश्यक संरक्षण और सहायता मिलना बंद हो गया। [13]
- आर्थिक संसाधनों की कमी - विश्वविद्यालय का संचालन दान, अनुदान और राजकीय संरक्षण पर निर्भर था। राजनीतिक अस्थिरता के कारण दानदाताओं की संख्या घटने लगी और आर्थिक संकट बढ़ने से संस्था की कार्यक्षमता प्रभावित हुई। [14]
- धार्मिक संघर्ष और आक्रमण- नालंदा मुख्यतः बौद्ध शिक्षा का केंद्र था। जब भारत में बौद्ध धर्म का प्रभाव घटा और हिंदू धर्म तथा अन्य धाराओं ने पुनः बल पाया, तो विश्वविद्यालय का महत्व धीरे-धीरे कम होने लगा। 12वीं शताब्दी में बिहितयार खिलजी के आक्रमण ने इसे अंतिम आघात पहुँचाया। उसकी सेना ने नालंदा को जला दिया, भिक्षुओं की हत्या की और विशाल पुस्तकालय को आग के हवाले कर दिया। कहा जाता है कि पुस्तकालय महीनों तक जलता रहा। [15]
- समाज में शिक्षा की दिशा का परिवर्तन - उस समय भारतीय समाज में शिक्षा का केंद्र धीरे-धीरे मंदिरों और गुरुकुलों की ओर स्थानांतरित होने लगा। फलस्वरूप नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों का महत्व कम हो गया।

इस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय का पतन केवल एक शैक्षणिक संस्था का अंत नहीं था, बल्कि यह भारतीय ज्ञान-परंपरा को गहरा आघात था। राजनीतिक अस्थिरता, संरक्षण की कमी, धार्मिक संघर्ष और विदेशी आक्रमण इसके पतन के प्रमुख कारण बने। फिर भी नालंदा की स्मृति आज भी विश्व में विद्यमान है और आधुनिक काल में इसके पुनर्निर्माण का प्रयास यह दर्शाता है कि भारतीय शिक्षा और संस्कृति की यह गौरवशाली परंपरा सदैव अमर रहेगी।

## नव-नालंदा महाविहार और आधुनिक पुनर्निर्माण

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस गौरव को पुनर्जीवित करने हेतु बिहार सरकार और केंद्र सरकार ने प्रयास आरंभ किए। 1951 में “नव-नालंदा महाविहार” की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य बौद्ध अध्ययन, पाली, संस्कृत, तिब्बती तथा प्राचीन भारतीय दर्शन को प्रोत्साहित करना था। यह संस्थान आरंभ में नालंदा खण्डहर के समीप खोला गया और आज यह अंतर्राष्ट्रीय शोध केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। महाविहार में अनेक विदेशी छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन पर शोध को नया आयाम दे रहे हैं। [16]

इक्कीसवीं सदी में भारत सरकार ने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण की दिशा में ठोस कदम उठाए। 2010 में संसद ने नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया, जिसके अंतर्गत आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना

राजगीर (बिहार) में की गई। यह विश्वविद्यालय एशियाई देशों के सहयोग से विकसित हो रहा है और यहाँ पर्यावरण अध्ययन, ऐतिहासिक अध्ययन, भाषा एवं साहित्य, बौद्ध अध्ययन, और अंतर्राष्ट्रीय संबंध जैसे विषयों पर उच्चस्तरीय शोध कार्य चल रहे हैं। इसका उद्देश्य प्राचीन नालंदा की वैश्विक बौद्धिक परंपरा को आधुनिक संदर्भों में पुनर्जीवित करना है। [17]

अतः स्पष्ट है कि प्राचीन नालंदा ने शिक्षा को विश्वव्यापी दृष्टि प्रदान की, जबकि नव-नालंदा महाविहार और आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय ने इस गौरवशाली धरोहर को पुनः जीवित करने का कार्य किया। इससे न केवल बिहार बल्कि सम्पूर्ण भारत की शैक्षणिक पहचान सुदृढ़ हुई है और आज भी नालंदा ज्ञान और संस्कृति का विश्वस्तरीय प्रतीक बना हुआ है।

## बिहार की शिक्षा प्रणाली में नालंदा का स्थायी योगदान

भारतवर्ष की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था विश्वभर में अपनी विशेषता, संगठन और उच्च स्तर की विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध रही है। इसमें बिहार का स्थान विशेष है क्योंकि यहाँ स्थित नालंदा विश्वविद्यालय ने न केवल भारत की बल्कि सम्पूर्ण एशिया की शिक्षा और संस्कृति को नई दिशा प्रदान की। नालंदा, गुप्तकाल में पाँचवीं शताब्दी ईस्टी के आसपास स्थापित हुआ और यह तेरहवीं शताब्दी तक ज्ञान-विज्ञान का प्रमुख केन्द्र बना रहा। [18]

नालंदा विश्वविद्यालय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान इसकी संगठित और उच्च शिक्षा प्रणाली थी। यहाँ विद्यार्थियों को प्रवेश के लिए कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता था, जिससे केवल योग्य और प्रतिभाशाली छात्र ही शिक्षा प्राप्त कर पाते। विश्वविद्यालय में आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक व्याख्यान कक्ष और विशाल पुस्तकालय “धर्मगंज” था, जिसमें लाखों पांडुलिपियाँ सुरक्षित थीं। इन ग्रंथों ने न केवल भारतीय दर्शन, धर्म और साहित्य बल्कि चिकित्सा, गणित, खगोल, तर्कशास्त्र और व्याकरण जैसे विषयों को भी समृद्ध किया। [19]

नालंदा विश्वविद्यालय ने बिहार की शिक्षा प्रणाली में वैश्विक दृष्टिकोण को जोड़ा। चीन, कोरिया, जापान, मंगोलिया, तिब्बत, श्रीलंका आदि देशों के छात्र यहाँ अध्ययन के लिए आते थे। चीनी यात्री हेनेसांग और इतिंग ने यहाँ की अनुशासित शिक्षा प्रणाली और विद्वानों की विद्यमानता का उल्लेख किया। इस प्रकार नालंदा ने बिहार को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के मानचित्र पर स्थापित किया। बिहार की शिक्षा प्रणाली में नालंदा का स्थायी योगदान ज्ञान की समन्वयात्मक परंपरा है। यहाँ बौद्ध धर्म के साथ-साथ वैदिक परंपरा और अन्य दार्शनिक मतों का भी अध्ययन होता था। इससे बौद्धिक उदारता, सहिष्णुता और बहुवाद की परंपरा विकसित हुई, जो आज भी बिहार की शैक्षिक और सांस्कृतिक धरोहर का अंग है। [20]

नालंदा विश्वविद्यालय का महत्व केवल ऐतिहासिक नहीं बल्कि प्रेरणादायी भी है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भी नालंदा के आदर्श जैसे- अनुशासन, शोध, ज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान और व्यापक पुस्तकालय व्यवस्था- अनुसरणीय हैं। 21वीं शताब्दी में नालंदा विश्वविद्यालय का पुनर्निर्माण इसी शैक्षणिक परंपरा के संरक्षण और विकास का प्रतीक है।

इस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय ने बिहार की शिक्षा प्रणाली को संगठन,

विद्वन्ता, अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा और बहुवाद की समृद्ध धरोहर दी। इसका स्थायी योगदान यह है कि आज भी शिक्षा की वैश्विकता, शोध की गहराई और ज्ञान की समन्वयात्मक दृष्टि को नालंदा से प्रेरणा मिलती है। [21]

### निष्कर्ष

नालंदा विश्वविद्यालय केवल एक प्राचीन शिक्षण संस्थान नहीं था, बल्कि यह विश्व को ज्ञान और शिक्षा की रोशनी देने वाला महान केंद्र था। इसने बिहार को शिक्षा का वैश्विक केंद्र बनाया और उसकी सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध किया। यद्यपि 12वीं शताब्दी में इसका पतन हुआ, किंतु इसकी शैक्षिक परंपरा और योगदान आज भी जीवित है। आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय इस धरोहर को आगे बढ़ाने का प्रयास है। इस प्रकार, नालंदा विश्वविद्यालय बिहार की शिक्षा का गौरव, उसकी पहचान और उसकी ऐतिहासिक धरोहर है। शिक्षा के क्षेत्र में इसका योगदान आज भी प्रासंगिक है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नालंदा विश्वविद्यालय ने बिहार की शिक्षा को विश्वस्तरीय आयाम दिया। आज भी इसकी धरोहर हमें प्रेरित करती है कि शिक्षा केवल नौकरी या आर्थिक उन्नति का साधन नहीं बल्कि मानवीय मूल्यों, अनुसंधान, सृजनात्मकता और वैश्विक बौद्धिक आदान-प्रदान का माध्यम हो। नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान यह दर्शाता है कि शिक्षा के क्षेत्र में बिहार का इतिहास गौरवशाली रहा है और भविष्य में भी यह परंपरा नए रूप में आगे बढ़ सकती है।

### सन्दर्भ-सूची

- चोपड़ा, डा० पी०एन०, पूरी दास, पृ० 178।
- प्रकाशक-यूनाइटेड बुक डिपो, 2003, पृ० 775-776
- प्रकाश, डॉ० ओम, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ० 222
- बील लाईफ ऑफ वानसंग, 1911, संस्क० पृ० 112
- वेनसंग वार्टस, भाग-2, पृ० 164
- विद्याभूषण, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लॉजिक, पृ० 561, डॉ० एस०एस० सहाय, पृ० 239 पर 17. जनरल ऑफ यूनाइटेड प्राविन्स हिस्टॉरिकल सोसाइटी, 1911, जिल्द 14, पृ० 3
- चौधरी, डा० राधाकृष्ण, प्राचीन भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास प्रकाशन भारती भवन: नई दिल्ली, 2017, पृ० 318।
- बालकृष्ण लाइक, पृ० 109-114, लेटर्स ऑन युवाड् च्वाड् ट्रैवल्स भाग 154-171, तकसुक द्वारा सम्पादित रिकार्ड ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड वाई इंसिंग, पृ० 30, 65, 86, तथा 154
- पील लाइफ ऑफ हवेसंग, पृ०- 111
- बील रिकॉर्ड्स II, पृ०- 170, फाइफ पी० पी० पृ० 111-112
- एमिग्रामिका इंडिया, 20, 43 तथा 37 का ई० पृ० 45
- टाका कुसु इंसिंग, पृ०- 154
- ई० आई० पृ०-311
- बील लाइफ ऑफ हवेसंग, पृ०- 112

- वेसंग भाग 2, पृ० 165
- बील आइफ ऑफ हवेसंग, पृ०- 112
- ई० आई० पृ०-37
- वही, पृ० 311
- बमु इंडियन टीचर्स ऑफ बुद्धिष्ठ यूनिवरसिटिज, पृ० 116 131
- विद्याभूषण, हिस्ट्री ऑफ इंडिया लौजिक, पृ० 516
- टाका कुसु इंसिंग, पृ०- 86